केन्द्रीयसंस्कृतविश्वविद्यालयः

हिन्दी-साहित्य

शास्त्री : तृतीय-सत्रार्द्ध

GE – 3

(रीतिकालीन हिन्दी साहित्य का इतिहास एवं काव्य)

क्र.	पाठ्यक्रम विवरण	क्रेडिट	घण्टे
1	• रीतिकाल • नामकरण • सीमांकन • परिस्थितियां • रीतिकाव्य की प्रमुख प्रवृत्तियाँ	1	16-20
2	रीतिकाल के प्रमुख कवि - • चिंतामणि, केशवदास, पद्माकर, मतिराम, भूषण, सेनापति, बिहारी, देव, वृन्द, घनानंद, आलम, ठाकुर, बोधा, द्विजदेव • रीतिकाल की उपलब्धियां एवं सीमाएँ	1	16-20
3	**1. बिहारी : बिहारी रत्नाकर, सम्पादकः जगन्नाथ दास 'रत्नाकर'** 1. मेरी भव - बाधा हरौ..... हरित - दुति होइ ॥ 2. अजौं तर्यौना हीं रह्यौ ..... मुकुतनु कैं संग ॥ 3. कब कौ टेरतु दीन रट..... जगबाइ ॥ 4. मरनु भलौ बरु बिरह तैं ..... दुहूँ दुखु होइ ॥ 5. घरु घरु डोलत दीन ह्वै..... बड़ौ लखाइ ॥ 6. बड़े न हूजै गुननु बिनु..... गढ़्यौ न जाइ ॥ 7. नर की अरु नल - नीर की..... तेतौ ऊंचौ होइ ॥ 8. दुसह दुराज प्रजानु कौं..... रबि चंदु ॥ 9. दृग उरझत, टूटत कुटुम ..... नई यह रीति ॥ 10. इन दुखिया अँखियानु कौ..... अनदेखै अकुलाँहि ॥।	1	16-20

भारतीय भाषा विद्याशाखा प्रमुख - *प्रो. अर्चना दुबे*

दिनांक : 15.06.2024

अर्चना दुबे
हस्ताक्षर

	2. घनानंदः कवित्त एवं सवैये : **घनानंद ग्रंथावली, सम्पादकः विश्वनाथप्रसाद मिश्र** 1. मीत सुजान अनीति करौ..... प्यासनि मारत मोही ॥ छंद - 7, पृ. 6 2. प्रीतम सुजान मेरे हित..... को घन बरसायहौ । । छंद -24, पृ. 9-10 3. पहिले अपनाय सुजान सनेह..... यौं बिस छोरियै जू ॥ छंद-38, पृ. 14 4. रावरे रूप की रीति अनूप..... रीझ के हाथनि हारियै । । छंद - 41, पृ. 15 5. जीवन हौं जिय की सब जानत जान..... हाय अनीति सु दीठि छिपैये ॥ छंद - 189, पृ. - 61		
4	**3. भूषण : भूषण ग्रंथावली - सम्पादकः आचार्य विश्वनाथप्रसाद मिश्र, 'शिवभूषण' - (39, 45, 48, 50, 59)** 1. तो सम हो सेस सो तौ बसत..... बातैं चित्त चुनियै । (39) 2. यौं सिवराज कौ राज..... न कछु है । (45) 3. तेरौ तेज सरजा समथ्थ दिनकर..... तेरे कर सौ। (48) 4. इंद्र जिमि जंभ पर, बाड़ब सुअंभ पर .....सेर सिवराज हैं । (50) 5. सिंहथरी जाने बिन जावली - जंगल भटी हठी..... आँकुसको सटक्यौ। (59)	1	16-20
	4. वृन्द : हिन्दी काव्य गंगा (प्रथम भाग) सम्पादकः सुधाकर पाण्डेय 1. जाहीं ते कछु ..... कैसे बुझत पियास। छंद सं. (3) 2. कैसे निबहै निबल..... मगर सों बैर। (5) 3. अपनी पहुँच विचारि..... जेती लंबी सौर। (7) 4. विद्या धन उद्यम बिना..... पंखा की पौन। (8) 5. ओछे नर की प्रीति..... घटत घट जाय। (9) 6. नयना देत बताय सब..... बुरी कहि देत। (15) 7. दुष्ट न छाँड़े दुष्टता .....होत न सेत। (22) 8. जैसे बंधन प्रेम को.....न निकरै भौर। (24) 9. जुवा खेले होत है ..... पाँडव करे बनवास। (39) 10. सरसति के भंडार को.....बिन खरचे घटि जात। (40)		

भारतीय भाषा विद्याशाखा प्रमुख - *प्रो. अर्चना दुबे*

दिनांक : 15.06.2024

अर्चना दुबे
हस्ताक्षर

सहायक सन्दर्भ ग्रन्थ

1.	बिहारी रत्नाकर	सम्पादक : जगन्नाथ दास रत्नाकर।
2.	घनानंद ग्रन्थावली	सम्पादक : आचार्य विश्वनाथप्रसाद मिश्र
3.	भूषण ग्रंथावली	सम्पादक: आचार्य विश्वनाथप्रसाद मिश्र, वाणी प्रकाश, नयी दिल्ली
4.	हिन्दी काव्य गंगा (प्रथम भाग)	सम्पादक : सुधाकर पाण्डेय, नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी
5.	रीतिकाव्य की भूमिका	डॉ. नगेन्द्र।

भारतीय भाषा विद्याशाखा प्रमुख - प्रो. *अर्चना दुबे*

दिनांक : 15.06.2024

अर्चना दुबे
हस्ताक्षर